35 सूरए फातिर

आयत 1-5 का विश्लेषण:

आयत 1

आयत का अनुवाद:
”दा के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। हर तरह की तारीफ ख़ुदा ही के लिए (मख़सूस) है जो सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला फरिश्तों का (अपना) क़ासिद बनाने वाला है जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर होते हैं (मखलूक़ात की) पैदाइश में जो (मुनासिब) चाहता है बढ़ा देता है बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर (व तवाना है)।”

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत ईश्वर की महानता और उसकी शक्ति को दर्शाती है, जो हर चीज़ को बनाने वाला और नियंत्रित करने वाला है।

हेतु (Reason):
इस आयत में भगवान की शक्ति और उसकी रहमानी क़ाबिलियत पर बल दिया गया है कि वह किसी भी काम को अपनी इच्छा से बढ़ा सकता है और सब पर क़ादिर है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी ईश्वर की असीम शक्ति का उल्लेख किया गया है, जहां कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि वह सर्वशक्तिमान हैं और हर वस्तु में विद्यमान हैं (भगवद गीता 10.20)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दर्शाती है कि भगवान के पास हर चीज़ पर अधिकार है और वह अपनी इच्छा से दुनिया के हर पहलू को नियंत्रित करता है।

आयत 2

आयत का अनुवाद:
"लोगों के वास्ते जब (अपनी) रहमत (के दरवाज़े) खोल दे तो कोई उसे जारी नहीं कर सकता और जिस चीज़ को रोक ले उसके बाद उसे कोई रोक नहीं सकता और वही हर चीज़ पर ग़ालिब और दाना व बीना हकीम है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जब भगवान अपनी रहमत किसी पर डालते हैं, तो कोई उसे रोक नहीं सकता, और जब वह किसी चीज़ को रोकते हैं, तो उसे कोई नहीं खोल सकता।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को सिद्ध करती है कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार ही सब कुछ घटित होता है और कोई भी ताकत उसे बदल नहीं सकती।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भगवान कृष्ण ने कहा था कि जिनके दिलों में वह स्वयं बैठते हैं, उन्हें वह अपनी कृपा से प्रकट करते हैं, और किसी अन्य बल से वह प्रभावित नहीं होते (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि ईश्वर का रहम और कृपा अडिग है, और कोई भी उसे बाधित नहीं कर सकता।

आयत 3

आयत का अनुवाद:
"लोगों ख़ुदा के एहसानात को जो उसने तुम पर किए हैं याद करो क्या ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ालिक है जो आसमान और ज़मीन से तुम्हारी रोज़ी पहुँचाता है उसके सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि भगवान के अलावा कोई भी इस ब्रह्मांड का निर्माण और पालन नहीं कर सकता, और ईश्वर के अलावा किसी की पूजा करना व्यर्थ है।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि भगवान ही सबका पालनकर्ता है और उसके अलावा कोई ऐसा शक्तिशाली तत्व नहीं है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि वह ही सभी जीवों के पालनकर्ता हैं, और सभी जीव उनके अधीन हैं (भगवद गीता 9.22)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत इस बात को सिद्ध करती है कि सभी जीवन के स्रोत और पालनकर्ता केवल भगवान हैं, और उसकी पूजा से परे कोई अन्य पूजा व्यर्थ है।

आयत 4

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो (कुढ़ो नहीं) तुमसे पहले बहुतेरे पैग़म्बर (लोगों के हाथों) झुठलाए जा चुके हैं और (आख़िर) कुल उमूर की रूजू तो ख़ुदा ही की तरफ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि यदि लोग किसी पैग़म्बर को झुठलाते हैं, तो यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि इससे पहले भी कई पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि पैग़म्बर का झुठलाया जाना कोई नई घटना नहीं है, और अंततः सभी निर्णय ईश्वर के हाथ में हैं।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि जब कोई व्यक्ति धर्म के मार्ग से भटकता है, तो उसे उसकी गलती की सजा मिलती है, और वह भगवान के क़ानून के अनुसार ही उसका निर्णय करता है (भगवद गीता 4.7)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि पैग़म्बर का विरोध सामान्य है, और इसका अंतिम निर्णय केवल ईश्वर के हाथ में होता है।

आयत 5

आयत का अनुवाद:
"लोगों ख़ुदा का (क़यामत का) वायदा यक़ीनी बिल्कुल सच्चा है तो (कहीं) तुम्हें दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी फ़रेब में न लाए (ऐसा न हो कि शैतान) तुम्हें ख़ुदा के बारे में धोखा दे।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Antithesis)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि क़यामत का दिन निश्चित है, और इस धरती की अस्थायी सुख-सुविधाओं के चलते लोगों को धोखा नहीं खाना चाहिए।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को प्रस्तुत करती है कि संसार की जीवन शैली धोखा देने वाली हो सकती है, और अंततः जो सत्य है, वह ईश्वर का वादा है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि संसार के सुख अस्थायी होते हैं और इस जीवन में स्थिरता और शांति केवल भगवान के मार्ग पर ही मिल सकती है (भगवद गीता 9.33)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि संसार के झूठे आकर्षणों से ध्यान हटाकर हमें ईश्वर के सत्य पर विश्वास रखना चाहिए।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमेय (Prameya)	क्या ईश्वर की शक्ति और नियंत्रण को पूर्ण रूप से स्वीकार करना आवश्यक है?
2	व्याप्ति (Vyapti)	क्या ईश्वर के रहम को किसी भी शक्ति से बाधित किया जा सकता है?
3	हेत (Reason)	क्या ईश्वर के अलावा कोई दूसरा पालनकर्ता हो सकता है?
4	उपमान (Upamana)	क्या पैग़म्बरों का विरोध सामान्य घटना है और इसका कोई स्थायी प्रभाव नहीं होता?
5	विपरीत (Antithesis)	क्या जीवन की अस्थायी सुख-सुविधाएँ ईश्वर के सत्य को छिपा सकती हैं?

निष्कर्ष (Conclusion):
इन आयतों में भगवान की शक्ति, कृपा और सत्यता पर बल दिया गया है, और यह स्पष्ट किया गया है कि

ईश्वर के निर्णय से कोई बच नहीं सकता। साथ ही, संसार के आकर्षणों से धोखा न खाने की चेतावनी दी गई है।

आयत 6-10 का विश्लेषण:

आयत 6

आयत का अनुवाद:
"बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे अपना दुश्मन बनाए रहो वह तो अपने गिरोह को बस इसलिए बुलाता है कि वह लोग (सब के सब) जहन्नुमी बन जाएँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि शैतान का उद्देश्य केवल लोगों को गुमराह करना और उन्हें नरक में ले जाना है।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि शैतान का उद्देश्य नकारात्मकता फैलाना और मानवता को गलत रास्ते पर डालना है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी शैतान के प्रभाव और उसके मार्ग पर चलने के बारे में कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि वह जो भी बुरी शक्ति है, उससे दूर रहना चाहिए और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए (भगवद गीता 16.23)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि शैतान के साथ मित्रता न करना और उसके रास्ते से बचना चाहिए क्योंकि उसका उद्देश्य केवल विनाश है।

आयत 7

आयत का अनुवाद:
"जिन लोगों ने (दुनिया में) कुफ्र इख़्तेयार किया उनके लिए (आख़ेरत में) सख़्त अज़ाब है और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए उनके लिए (गुनाहों की) मग़फेरत और निहायत अच्छा बदला (बेहश्त) है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत स्पष्ट रूप से कहती है कि जो लोग काफ़िर हैं, उन्हें कड़ी सजा मिलेगी, और जो ईमान लाएंगे और अच्छे कार्य करेंगे, उन्हें स्वर्ग मिलेगा।

हेतु (Reason):
यह आयत ईश्वर के न्याय की व्याप्ति को बताती है कि वह अपने निर्णयों में हर किसी को उसके कर्मों के आधार पर पुरस्कार या दंड देगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भी कर्म और उसके फल के बारे में कृष्ण ने कहा था कि जैसे लोग कर्म करते हैं, वैसे ही वे फल प्राप्त करते हैं (भगवद गीता 3.35)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ईश्वर के न्यायिक सिद्धांत को स्पष्ट करती है कि अच्छे कर्मों के लिए स्वर्ग मिलेगा और बुरे कर्मों के लिए दंड मिलेगा।

आयत 8

आयत का अनुवाद:
"तो भला वह शख़्स जिसे उस का बुरा काम शैतानी (अग़वा से) अच्छा कर दिखाया गया है और वह उसे अच्छा समझने लगा है (कभी मोमिन नेककार के बराबर हो सकता है हरगिज़ नहीं) तो यक़ीनी (बात) ये है कि ख़ुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है राहे रास्त पर आने (की तौफ़ीक़) देता है तो (ऐ रसूल कहीं) उन (बदबख़्तों) पर अफसोस कर करके तुम्हारे दम न निकल जाए जो कुछ ये लोग करते हैं ख़ुदा उससे ख़ूब वाक़िफ़ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत कहती है कि जिन लोगों को शैतान भ्रमित करता है और वे अपने गलत कर्मों को अच्छा समझने लगते हैं, वे गुमराही में छोड़ दिए जाते हैं।

हेतु (Reason):
 यह आयत इस तथ्य को प्रस्तुत करती है कि ईश्वर किसी को गुमराही में डालने की शक्ति रखता है, और उसके मार्गदर्शन से ही व्यक्ति सत्य को पहचान सकता है।

उदाहरण (Example):
 भगवद गीता में कृष्ण ने यह कहा था कि जो व्यक्ति केवल आत्मा को पहचानता है और सत्य मार्ग पर चलता है, वह भटकता नहीं है (भगवद गीता 18.63)।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत यह प्रमाणित करती है कि मार्गदर्शन और गुमराही केवल ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है, और उसकी कृपा से ही व्यक्ति सत्य को देख सकता है।

आयत 9

आयत का अनुवाद:
 "और ख़ुदा ही वह (क़ादिर व तवाना) है जो हवाओं को भेजता है तो हवाएँ बादलों को उड़ाए-उड़ाए फिरती है फिर हम उस बादल को मुर्दा (उफ़तादा) शहर की तरफ हका देते हैं फिर हम उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मर जाने के बाद शादाब कर देते हैं यूँ ही (मुर्दों को क़यामत में जी उठना होगा)।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत प्रकृति की प्रक्रिया को दर्शाती है, जिसमें भगवान हवाओं के द्वारा बादलों को उठाता है और फिर उन बादलों से वर्षा करके ज़मीन को फिर से जीवित करता है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह स्पष्ट करती है कि जैसे भगवान प्रकृति में जीवन की पुनर्स्थापना करता है, वैसे ही वह क़यामत में मुर्दों को जीवन प्रदान करेगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने कहा था कि आत्मा न तो मरती है और न ही नष्ट होती है, बल्कि यह साकार रूप में बार-बार जन्म लेती है (भगवद गीता 2.20)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह सिद्ध करती है कि जैसे जीवन के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया प्रकृति में होती है, वैसे ही क़यामत में जीवन का पुनर्निर्माण होगा।

आयत 10

आयत का अनुवाद:
"जो शख़्स इज़्ज़त का ख्वाहाँ हो तो ख़ुदा से माँगे क्योंकि सारी इज़्ज़त ख़ुदा ही की है उसकी बारगाह तक अच्छी बातें (बुलन्द होकर) पहुँचतीं हैं और अच्छे काम को वह ख़ुद बुलन्द फरमाता है और जो लोग (तुम्हारे ख़िलाफ) बुरी-बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनके लिए क़यामत में सख़्त अज़ाब है और (आख़िर) उन लोगों की तदबीर मटियामेट हो जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि जो कोई इज़्ज़त चाहता है, उसे भगवान से माँगनी चाहिए, क्योंकि सभी इज़्ज़त और सम्मान भगवान के पास हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तथ्य को प्रस्तुत करती है कि ईश्वर ही सत्य और सम्मान का स्रोत है, और किसी अन्य से इज़्ज़त प्राप्त करना व्यर्थ है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि वह केवल अपनी शक्ति और आत्मसम्मान से नहीं, बल्कि भगवान की कृपा से ही विजयी हो सकते हैं (भगवद गीता 18.78)।

निगमन (Conclusion):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि इज़्ज़त और सम्मान का एकमात्र स्रोत भगवान है, और उसे ही सभी प्रकार की सफलता और सम्मान प्राप्त है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	हेत (Reason)	शैतान के उद्देश्य को क्यों और कैसे समझना चाहिए, क्या उसकी भूमिका केवल भ्रमित करने तक सीमित है?
7	व्याप्ति (Vyapti)	क्या अच्छे कार्यों और बुरे कार्यों का फल ईश्वर द्वारा निश्चित करना उचित है?
8	प्रमाण (Pramana)	क्या गुमराही और मार्गदर्शन केवल ईश्वर की इच्छा पर निर्भर होते हैं, और इसका न्याय क्या है?
9	प्रमेय (Prameya)	क्या प्रकृति की पुनर्स्थापना क़यामत के पुनर्जीवन से मिलती है?
10	उपमान (Upamana)	इज़्ज़त और सम्मान के स्रोत के रूप में भगवान की भूमिका का क्या निहितार्थ है?

निष्कर्ष (Conclusion):
इन आयतों में शैतान के भ्रम, ईश्वर के न्याय, अच्छे और बुरे कर्मों का फल, और क़यामत में जीवन के

पुनर्निर्माण के विचारों पर बल दिया गया है। साथ ही, यह भी स्पष्ट किया गया है कि सम्मान और इज़्ज़त केवल ईश्वर के पास हैं, और इसके लिए केवल उसकी बारगाह में जाना चाहिए।

आयत 11 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने तुम लोगों को (पहले पहल) मिट्टी से पैदा किया फिर नतफ़े से फिर तुमको जोड़ा (नर मादा) बनाया और बग़ैर उसके इल्म (इजाज़त) के न कोई औरत हमेला होती है और न जनती है और न किसी शख़्स की उम्र में ज़्यादती होती है और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर वह किताब (लौहे महफ़ूज़) में (ज़रूर) है बेशक ये बात ख़ुदा पर बहुत ही आसान है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत जीवन के उत्पत्ति और मृत्यु से संबंधित है, जिसमें कहा गया है कि हर इंसान की उत्पत्ति, प्रजनन, और उम्र का निर्धारण ख़ुदा द्वारा किया गया है।

हेतु (Reason):
यह कथन बिना कोई स्पष्ट तर्क या वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किए दावा करता है कि "ख़ुदा पर यह बहुत आसान है" और हर व्यक्ति की आयु और प्रजनन केवल उसकी इच्छा पर निर्भर है। यह दर्शन और अनुभव के प्रमाण से संबंधित नहीं है। इसके अलावा, इस प्रकार के दावे से यह संकेत मिलता है कि किसी प्रकार के प्राकृतिक कारणों या वैज्ञानिक प्रक्रिया का कोई अस्तित्व नहीं है, जो कि हिंदू दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

उदाहरण (Example):
वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मानव जीवन का उत्पत्ति और विकास जैविक प्रक्रिया के तहत होता है, जो कुदरती नियमों पर आधारित है। इस प्रक्रिया में मादा और पुरुष के गुणसूत्रों का मिलन और विकास बगैर किसी अलौकिक हस्तक्षेप के होता है। इसके विपरीत, हिंदू दर्शन (उदाहरणार्थ, वेदांत या सांख्य योग) में जीवन और मृत्यु की प्रक्रियाएँ कर्म के सिद्धांत से जुड़ी होती हैं, न कि केवल ईश्वर की इच्छा पर आधारित।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय तत्व के विपरीत है, क्योंकि यह जीवन और मृत्यु को एक पूर्व निर्धारित शक्ति का कार्य मानती है, जबकि हिंदू दर्शन के अनुसार, जीवन का उत्पत्ति और मृत्यु जैविक और कर्मपरक प्रक्रियाओं के

अंतर्गत आती हैं। यह आयत बिना किसी तर्क या प्रमाण के एक अदृश्य शक्ति पर निर्भर करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 12 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"उसकी कुदरत देखो, दो समन्दर बावजूद मिल जाने के यकसाँ नहीं हो जाते ये (एक तो) मीठा ख़ुश ज़ाएका कि उसका पीना सुवारत है और ये (दूसरा) खारी कड़ुवा है और (इस इख़तेलाफ़ पर भी) तुम लोग दोनों से (मछली का) तरो ताज़ा गोश्त (यकसाँ) खाते हो और (अपने लिए ज़ेवरात (मोती वग़ैरह) निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तुम देखते हो कि कश्तियां दरिया में (पानी को) फाड़ती चली जाती हैं ताकि उसके फ़ज़्ल (व करम तिजारत) की तलाश करो और ताकि तुम लोग शुक्र करो।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत समुद्रों के विभिन्न गुणों के बारे में बात करती है और उन गुणों के आधार पर यह ख़ुदा की अनंत शक्ति का संकेत देती है।

हेतु (Reason):
यह आयत कहती है कि दो समुद्रों का मिलने के बावजूद वे अपनी पहचान बनाए रखते हैं, और इसके द्वारा यह बताने की कोशिश की जाती है कि ख़ुदा की शक्ति के कारण प्रकृति में विभिन्न गुण एक साथ रहते हुए अलग होते हैं। लेकिन यह उदाहरण न्याय दर्शन के उपमान तत्व का सही उपयोग नहीं करता क्योंकि यह प्राकृतिक घटना के पीछे किसी विशेष कारण को स्पष्ट नहीं करता, और यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से केवल एक सामान्य पर्यावरणीय घटना को अनुशंसा कर रहा है।

उदाहरण (Example):
समुद्रों का मिलना और उनकी विशेषताएँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि विभिन्न जल स्रोतों का भौतिक गुणात्मक भेद मानवीय या पर्यावरणीय कारणों द्वारा उत्पन्न होता है, न कि अलौकिक बल द्वारा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत उपमान तत्व का उपयोग करने में विफल रहती है, क्योंकि यह घटनाओं को केवल सांकेतिक रूप

से प्रस्तुत करती है, लेकिन इनके भौतिक कारणों या सिद्धांतों का वर्णन नहीं करती। हिंदू दर्शन में यह समझा जाता है कि प्रकृति के कार्य भी तर्कसंगत और भौतिक प्रक्रियाओं के आधार पर होते हैं।

आयत 13 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"वही रात को (बढ़ा के) दिन में दाखिल करता है (तो रात बढ़ जाती है) और वही दिन को (बढ़ा के) रात में दाखिल करता है (तो दिन बढ़ जाता है और) उसी ने सूरज और चाँद को अपना मुतीइ बना रखा है कि हर एक अपने (अपने) मुअय्यन (तय) वक़्त पर चला करता है वही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है उसी की सलतनत है और उसे छोड़कर जिन माबूदों को तुम पुकारते हो वह छुवारों की गुठली की झिल्ली के बराबर भी तो इख़्तेयार नहीं रखते।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि सूरज और चाँद की गति केवल ख़ुदा की इच्छा से होती है और कोई अन्य देवता इनकी सत्ता पर प्रभाव नहीं डाल सकता।

हेतु (Reason):
यह तर्क है कि सूरज और चाँद की गति केवल ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है, जबकि यह प्राकृतिक घटनाएँ भौतिक कारणों से संचालित होती हैं। न्याय दर्शन में, प्रत्येक घटना का एक निश्चित कारण होता है, और इस आयत में व्याप्ति (Vyapti) तत्व के माध्यम से कोई तर्कसंगत या भौतिक कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण (Example):
सूरज और चाँद की गति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ग्रहों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति, पृथ्वी की गति, और अन्य भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्धारित किया जाता है, न कि केवल एक अलौकिक शक्ति द्वारा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत व्याप्ति तत्व के अंतर्गत कमजोर है, क्योंकि यह बिना भौतिक और वैज्ञानिक कारणों के केवल एक अज्ञेय शक्ति के अस्तित्व को दर्शाती है, जो न्याय दर्शन और भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	प्रमेय	जीवन और मृत्यु को ख़ुदा की इच्छा पर आधारित मानना, जो भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत है।
12	उपमान	प्राकृतिक घटनाओं को बिना किसी भौतिक कारण के अलौकिक शक्ति से जोड़ना।
13	व्याप्ति	सूरज और चाँद की गति को केवल ख़ुदा की इच्छा पर आधारित मानना, बिना भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण के।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में जीवन, प्राकृतिक घटनाओं, और ब्रह्मांड की प्रक्रिया को बिना भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण के केवल अलौकिक बलों से जोड़ने की कोशिश की गई है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, प्रत्येक घटना का एक तर्कसंगत और भौतिक कारण होना चाहिए, जो इन आयतों में स्पष्ट नहीं है।

आयत 14 और 15 का विश्लेषण

आयत 14 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"अगर तुम उनको पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार को सुनते नहीं अगर (बिफ़रज़े मुहाल) सुनो भी तो तुम्हारी दुआएं नहीं कुबूल कर सकते और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इन्कार कर बैठेंगे और वाक़िफकार (शख़्स की तरह कोई दूसरा उनकी पूरी हालत) तुम्हें बता नहीं सकता।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि अगर कोई व्यक्ति अन्य देवताओं या माबूदों को पुकारे, तो वे उनकी पुकार को सुन नहीं सकते और क़यामत के दिन वे शिर्क (ईश्वर के साथ अन्य देवताओं का पूजन) से इन्कार करेंगे।

हेतु (Reason):
 यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि केवल एक अलौकिक शक्ति (ख़ुदा) ही सत्य और प्रभावी है, जबकि अन्य माबूद (देवता) प्रभावहीन हैं और शिर्क को नकारेंगे। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, यह तर्क एक सामान्य और सार्वभौमिक कारण का स्पष्ट रूप से समर्थन नहीं करता। यह व्याप्ति (Vyapti) के सिद्धांत के विपरीत है, क्योंकि शिर्क और अन्य देवताओं को असत्य या प्रभावहीन मानने का कोई प्रमाणिक कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण (Example):
 हिंदू दर्शन में, ब्रह्मा, विष्णु और महेश की शक्ति को एकजुट रूप से देखा जाता है, जहां हर एक देवता का एक विशेष कार्य और योगदान होता है। इसलिए, किसी भी देवता की पूजा को असत्य या निरर्थक मानना तर्कसंगत नहीं है, खासकर जब हम देवता की भूमिका और उनके कर्मों को समझते हैं।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत में कमज़ोर है, क्योंकि यह केवल एक अलौकिक शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करती है, बिना किसी प्रामाणिक तर्क या तथ्य के। अन्य देवताओं के प्रति यह दृष्टिकोण तर्कसंगत और सबल नहीं है।

आयत 15 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
 "लोगों तुम सब के सब ख़ुदा के (हर वक़्त) मोहताज हो और (सिर्फ) ख़ुदा ही (सबसे) बेपरवा सज़ावारे हम्द (व सना) है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:
 प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत कहती है कि सभी लोग ख़ुदा के मोहताज हैं और केवल ख़ुदा ही सबसे अधिक प्रशंसा के योग्य है।

हेतु (Reason):
 यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य और अन्य जीव केवल ख़ुदा पर निर्भर हैं, जबकि अन्य विचारधाराओं में जीवन की उत्पत्ति और पालन को प्रकृति, कर्म, और अन्य कारणों से जोड़ा जाता है। यह

प्रमेय (Prameya) के सिद्धांत में विरोधाभास प्रस्तुत करता है क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्रता, कारण, और प्रक्रिया के अस्तित्व को नकारता है, जो कि हिंदू दर्शन में महत्वपूर्ण हैं।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, सभी जीवों को आत्मा और कर्म का विचार दिया गया है। आत्मा स्वयं में स्वतंत्र होती है और कर्म के आधार पर अपने अनुभवों को बदल सकती है। यह आयत कर्म और आत्मा के स्वतंत्र अस्तित्व को नकारती है, जो कि हिंदू दर्शन के अनुरूप नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय तत्व के संदर्भ में कमजोर है, क्योंकि यह मानव जीवन और अस्तित्व को केवल एक शक्तिशाली कर्ता (ख़ुदा) पर निर्भर मानती है, जबकि हिंदू दर्शन जीवन को स्वतंत्रता, कर्म, और कारणों से जोड़ता है। इसलिए यह विचार तर्कसंगत नहीं माना जा सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
14	**व्याप्ति**	**शिर्क और अन्य देवताओं को असत्य और प्रभावहीन मानने का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
15	**प्रमेय**	**केवल एक अलौकिक शक्ति पर निर्भरता, जबकि हिंदू दर्शन में आत्मा और कर्म का स्वतंत्र अस्तित्व है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में जीवन और अस्तित्व को केवल एक अलौकिक शक्ति पर निर्भर माना गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है। हिंदू दर्शन के अनुसार, जीवन और कर्म स्वतंत्र रूप से अपनी दिशा तय करते हैं, और इस दृष्टिकोण से यह आयतें तर्कसंगत और सबल नहीं हैं।

आयत 16 से 20 का विश्लेषण

आयत 16 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"अगर वह चाहे तो तुम लोगों को (अदम के पर्दे में) ले जाए और एक नयी ख़िलक़त ला बसाए।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि अगर ख़ुदा चाहे, तो वह पूरी सृष्टि को समाप्त कर सकता है और नई सृष्टि बना सकता है।

हेतु (Reason):
यह आयत एक सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व की पुष्टि करती है, जो सृष्टि को नष्ट करने और फिर से बनाने की शक्ति रखता है। लेकिन इस विचार के आधार पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है, जो इसे विश्वसनीय और तर्कसंगत बनाता। प्रमाण (Pramana) के दृष्टिकोण से, यह आयत केवल अलौकिक शक्ति की पुष्टि करती है, लेकिन किसी प्रकार का भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं देती।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, सृष्टि का निर्माण और विनाश ब्रह्मा और शिव के माध्यम से निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसमें कोई अंत या नया प्रारंभ नहीं होता। इसलिए, इस आयत में प्रस्तुत विचार कि पूरी सृष्टि को अचानक नष्ट किया जा सकता है, यह दृष्टिकोण Hindu दर्शन में वैकल्पिक नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमाण के संदर्भ में कमजोर है, क्योंकि यह केवल अलौकिक शक्ति का दावे करती है, जबकि इसमें किसी ठोस प्रमाण या आधार का उल्लेख नहीं है। हिंदू दर्शन में सृष्टि निरंतर परिवर्तनशील है और इस तरह के अचानक नाश की आवश्यकता नहीं होती।

आयत 17 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और ये कुछ ख़ुदा के वास्ते दुशवार नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत कहती है कि यह सब कार्य ख़ुदा के लिए कठिन नहीं हैं।

हेतु (Reason):

यह विचार अलौकिक शक्ति की पुष्टि करता है कि ख़ुदा के लिए कोई कार्य कठिन नहीं है, परंतु प्रमाण (Pramana) **के दृष्टिकोण से इसका समर्थन कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता है।**

उदाहरण (Example):

हिंदू दर्शन में, ब्रह्मा, विष्णु, और महेश के कार्यों को निश्चित रूप से गहरी सृजनात्मक और प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो निरंतर चलते रहते हैं। यहाँ पर यह विचार कि किसी कार्य को करने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती, अन्य दर्शनिक परिप्रेक्ष्य से वैकल्पिक हो सकता है, क्योंकि वे जीवन और सृष्टि को प्रक्रिया के रूप में देखते हैं।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमाण के दृष्टिकोण से स्थिर नहीं है क्योंकि इसमें केवल एक बिना प्रमाणित दृष्टिकोण पेश किया गया है, जो केवल ईश्वर की शक्ति का महिमामंडन करता है, लेकिन कोई ठोस तर्क नहीं प्रस्तुत करता।

आयत 18 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:

"और याद रहे कि कोई शख़्स किसी दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा और अगर कोई (अपने गुनाहों का) भारी बोझ उठाने वाला अपना बोझ उठाने के वास्ते (किसी को) बुलाएगा तो उसके बारे में से कुछ भी उठाया न जाएगा अगरचे (कोई किसी का) कराबतदार ही (क्यों न) हो।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत कहती है कि कोई व्यक्ति दूसरों के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा, और यदि कोई अपने गुनाहों का बोझ उठाने के लिए किसी को पुकारेगा, तो उसका बोझ किसी और पर नहीं डाला जा सकता।

हेतु (Reason):

यह विचार न्यायिक दृष्टिकोण से उचित है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों के परिणामों का सामना करना

चाहिए, और कोई व्यक्ति किसी अन्य का बोझ नहीं उठा सकता। यह तर्क जीवन के नैतिक आधार को स्पष्ट करता है। हिंदू दर्शन में भी, कर्म सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का फल स्वयं भोगता है, जो गीता में भी स्पष्ट रूप से बताया गया है (भगवद गीता 2.47)।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भुगतना होता है और यह एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक ठोस तर्क प्रस्तुत करती है, जो जीवन के नैतिक और कर्मों के सिद्धांत के अनुकूल है। इसे न्याय दर्शन और हिंदू दर्शन दोनों में समर्थन प्राप्त है।

आयत 19 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और अन्धा (क़ाफिर) और आँखों वाला (मोमिन किसी तरह) बराबर नहीं हो सकते।"

चुना गया न्याय तत्व: उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि अंधा और आँखों वाला व्यक्ति समान नहीं हो सकते, इसका आशय क़ाफ़िर और मोमिन से है।

हेतु (Reason):
यह विचार प्रतीकात्मक रूप से कहता है कि क़ाफ़िर और मोमिन का अस्तित्व और दृष्टिकोण भिन्न होते हैं, परंतु न्याय दर्शन में यह तर्क किया जा सकता है कि किसी व्यक्ति की आस्थाएँ और विश्वास उसके भौतिक रूप से आंतरिक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाते। यहां पर यह तुलना नैतिक और बौद्धिक दृष्टिकोण से की जा रही है, जो कि एक उचित तुलना नहीं हो सकती।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, आंतरिक दृष्टि को विकसित करने के लिए ध्यान और साधना पर जोर दिया जाता है। यह दृष्टिकोण क़ाफ़िर और मोमिन के बीच भेद को केवल दृष्टि या आस्थाओं से जोड़ता है, न कि गहरे बौद्धिक या आध्यात्मिक विकास से।

निगमन (Conclusion):
यह आयत आस्थाओं और विश्वासों के भेद को स्पष्ट करती है, लेकिन इसे केवल भौतिक दृष्टि के आधार पर तुलना करना तर्कसंगत नहीं है।

आयत 20 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और न अंधेरा (कुफ्र) और उजाला (ईमान) बराबर है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि अंधेरा (कुफ्र) और उजाला (ईमान) समान नहीं हो सकते।

हेतु (Reason):
यह तर्क एक स्पष्ट भेद प्रस्तुत करता है, जिसमें सत्य और असत्य के बीच एक सामान्य और सार्वभौमिक अंतर है। हालांकि, न्याय दर्शन में इसे व्याप्ति के सिद्धांत से देखा जा सकता है, जहां सत्य और असत्य का भेद केवल एक आस्थावादी दृष्टिकोण से परिभाषित किया जाता है, और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया है।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, प्रकाश (ज्ञान) और अंधकार (अज्ञान) के बीच भेद को गीता में बताया गया है, जहां ज्ञान को ब्रह्म के साथ जोड़ा गया है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के तहत बौद्धिक दृष्टिकोण से एक विशिष्ट भेद प्रस्तुत करती है, लेकिन इसके प्रभाव को केवल आस्थाओं पर आधारित नहीं माना जा सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

16	प्रमाण	कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।
17	प्रमाण	बिना प्रमाण के कोई स्थिति प्रस्तुत की गई है।
18	कारण	कर्म सिद्धांत के अनुसार यह विचार उचित है।
19	उदाहरण	विश्वासों और आस्थाओं के आधार पर तुलना को उचित नहीं कहा जा सकता।
20	व्याप्ति	सत्य और असत्य के भेद का कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में कई तर्क प्रस्तुत किए गए हैं, लेकिन कुछ आयतें प्रमाण और व्याप्ति के सिद्धांतों के आधार पर अधिक स्पष्ट और प्रमाणित नहीं हैं। हिंदू दर्शन के दृष्टिकोण से, कुछ आयतें आस्थाओं और विश्वासों के आधार पर कमज़ोर दिखती हैं, जबकि कर्मों और जीवन के नैतिक सिद्धांतों का पालन करने वाली आयतें अधिक सशक्त हैं।

आयत 21 से 25 का विश्लेषण

आयत 21 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और न छाँव (बेहिश्त) और धूप (दोज़ख़ बराबर है।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमेय (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि स्वर्ग (बेहिश्त) और नरक (दोज़ख़) का फर्क स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जैसे छाँव और धूप में अंतर होता है।

हेतु (Reason):
यह आयत स्वर्ग और नरक के बीच के अंतर को छाँव और धूप से तुलना करती है। हालांकि यह एक

प्रभावशाली रूपक हो सकता है, परंतु यह रूपक भौतिक रूप से समझने के लिए सीमित है, क्योंकि छाँव और धूप का अंतर सीमित और भौतिक है, जबकि स्वर्ग और नरक का संबंध आध्यात्मिक और अलौकिक है।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, स्वर्ग और नरक की स्थिति को कर्मों के फल के रूप में देखा जाता है, और यह सिद्धांत अधिक जटिल और गहरे आध्यात्मिक विचारों पर आधारित है, जिसमें केवल भौतिक भेद से तुलना करना संकुचित दृष्टिकोण हो सकता है।

निगमन (Conclusion):
यह रूपक (छाँव और धूप) स्वर्ग और नरक के भौतिक अंतर को पूरी तरह से सही नहीं प्रस्तुत करता है, क्योंकि स्वर्ग और नरक की वास्तविकता को केवल भौतिक दृष्टिकोण से समझना तर्कसंगत नहीं है। यह रूपक सीमित समझ को दर्शाता है, जो आध्यात्मिक दृष्टिकोण से पर्याप्त नहीं है।

आयत 22 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और न ज़िन्दे (मोमिनीन) और न मुर्दे (क़ाफिर) बराबर हो सकते हैं और ख़ुदा जिसे चाहता है अच्छी तरह सुना (समझा) देता है और (ऐ रसूल) जो (कुफ़्फ़ार मुर्दों की तरह) क़ब्रों में हैं उन्हें तुम अपनी (बातें) नहीं समझा सकते हो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि मोमिन (सच्चे विश्वास रखने वाले) और क़ाफ़िर (अविश्वासी) के बीच भेद है, और क़ाफ़िरों को जागरूक करना मुश्किल है, क्योंकि वे क़ब्रों में मुर्दों की तरह हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत विश्वास और अविश्वास के बीच के भेद को स्पष्ट करती है। हालांकि, प्रमाण (Pramana) **के संदर्भ में इसे एक अलौकिक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो एक सामान्य व्यक्ति के लिए समझना या प्रमाणित करना कठिन हो सकता है। यह विचार कि क़ाफ़िरों को जागरूक नहीं किया जा सकता क्योंकि वे क़ब्रों में मुर्दों की तरह हैं, यह केवल एक धार्मिक आस्थागत दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, आंतरिक दृष्टि और ज्ञान की प्राप्ति के लिए तपस्या और साधना का महत्व है। यहाँ पर, किसी के विश्वास और अविश्वास के बीच के भेद को चेतना के स्तर से जोड़ा जाता है, जो कि एक व्यापक दृष्टिकोण है और इसे किसी व्यक्ति के भौतिक रूप से मुर्दा होने से तुलना करना उचित नहीं लगता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत विश्वास और अविश्वास के भेद को बताती है, लेकिन इसमें प्रमाणित वैज्ञानिक या भौतिक आधार का अभाव है। हिंदू दर्शन में इसे आंतरिक विकास और साधना के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है, जहां मुर्दे और जीवित लोगों के बीच भेद केवल मानसिक और आध्यात्मिक स्थिति पर निर्भर करता है, न कि भौतिक रूप से।

आयत 23 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"तुम तो बस (एक ख़ुदा से) डराने वाले हो।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि पैग़म्बर का काम केवल लोगों को चेतावनी देना है, यह केवल डराने वाला कार्य है।

हेतु (Reason):
यह विचार बहुत सीमित है, क्योंकि केवल डराने की भूमिका को बताना, पैग़म्बर के कार्य का पूर्ण उद्देश्य नहीं हो सकता। हिंदू दर्शन में, मार्गदर्शन और ज्ञान की प्राप्ति के उद्देश्य को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है, न कि केवल डराने के लिए। भगवान की उपासना और ज्ञान की प्राप्ति का उद्देश्य भय नहीं, बल्कि आत्मा का उच्चतम स्तर पर परिष्करण है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि जीवन का उद्देश्य केवल धर्म और कर्म में स्थित होना है, न कि भय से प्रेरित होना। यह आयत उस विचार से मेल नहीं खाती।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत केवल पैग़ाम्बर के कार्य को एक सीमित दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है। हिंदू दर्शन में, जीवन का उद्देश्य अधिक व्यापक है और इसमें केवल भय नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और उच्च उद्देश्य के लिए मार्गदर्शन है।

आयत 24 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
 "हम ही ने तुमको यक़ीनन कुरान के साथ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला (पैग़ाम्बर) बनाकर भेजा और कोई उम्मत (दुनिया में) ऐसी नहीं गुज़री कि उसके पास (हमारा) डराने वाला पैग़ाम्बर न आया हो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
 प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत कहती है कि हर उम्मत (समाज) के पास एक पैग़ाम्बर आया है, जो उन्हें डराने और मार्गदर्शन देने के लिए भेजा गया।

हेतु (Reason):
 यह आयत सार्वभौमिकता का दावा करती है, लेकिन इसका प्रमाण केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है। विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग पैग़ाम्बरों के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है, लेकिन इस आयत में इसका कोई ठोस भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।

उदाहरण (Example):
 हिंदू दर्शन में, अनेक ऋषि-मुनियों और अवतारों के माध्यम से ज्ञान और मार्गदर्शन की प्रक्रिया को देखा जाता है, जैसे भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता में बताया। यह आयत सामान्य रूप से इस विचार से मेल खाती है, लेकिन कोई निश्चित ऐतिहासिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत करती है।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत प्रमाण के दृष्टिकोण से सीमित है, क्योंकि यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है। हालांकि, विभिन्न धार्मिक परंपराओं में मार्गदर्शन देने वाले व्यक्तित्व होते हैं, लेकिन इस सार्वभौमिक दृष्टिकोण को प्रमाणित करना कठिन है।

आयत 25 का विश्लेषण

आयत का अनुवादः
"और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो कुछ परवाह नहीं करो क्योंकि इनके अगलों ने भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया है (हालाँकि) उनके पास उनके पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौजिज़े और सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए थे।"

चुना गया न्याय तत्वः व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि अगर लोग पैग़म्बर को झूठा मानते हैं तो यह कोई नई बात नहीं है, क्योंकि इससे पहले भी लोग पैग़म्बरों को झूठा मान चुके हैं, हालांकि उनके पास स्पष्ट प्रमाण थे।

हेतु (Reason):
यह आयत पिछले पैग़म्बरों के प्रमाणों और उनके संदेशों को जोड़ती है, लेकिन यह प्रमाण केवल धार्मिक परंपराओं के संदर्भ में है। व्याप्ति के सिद्धांत से, यह केवल एक सामान्य तथ्य प्रस्तुत करती है, जो धार्मिक परंपराओं के बीच अंतर के बावजूद लागू होती है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में भी बहुत से अवतारों और गुरुओं ने समान सिद्धांतों की शिक्षाएँ दी हैं, लेकिन उनका विरोध भी हुआ था। यह दृष्टिकोण व्याप्ति के सिद्धांत के अंतर्गत सही है, लेकिन इसे प्रमाणित करने में यह धार्मिक विश्वास की बात बन जाती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के तहत समझी जा सकती है, लेकिन इसमें केवल धार्मिक विश्वास का संदर्भ है, जो इसे प्रमाणित नहीं करता है। यह विश्लेषण केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लागू होता है, जबकि तार्किक प्रमाण का अभाव है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

21	उपमेय	स्वर्ग और नरक की तुलना छाँव और धूप से करना भौतिक दृष्टिकोण से सीमित है।
22	प्रमाण	क़ाफ़िरों के अवबोधन के बारे में केवल धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।
23	कारण	पैग़म्बर के कार्य को केवल डराने के रूप में प्रस्तुत करना व्यापक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।
24	प्रमाण	सार्वभौमिक पैग़म्बरों का दावा केवल विश्वास पर आधारित है, कोई ठोस प्रमाण नहीं।
25	व्याप्ति	यह आयत ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समझी जा सकती है, लेकिन प्रमाण के दृष्टिकोण से यह अज्ञेय है।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में कुछ विचार धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों पर आधारित हैं, लेकिन इनमें भौतिक प्रमाण और तार्किक समर्थन की कमी है। हिंदू दर्शन में, जीवन के उद्देश्य और आध्यात्मिक विकास को अधिक व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाता है, न कि केवल धार्मिक विश्वासों के आधार पर।

आयत 26 से 30 का विश्लेषण

आयत 26 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"फिर हमने उन लोगों को जो काफ़िर हो बैठे ले डाला तो (तुमने देखाकि) मेरा अज़ाब (उन पर) कैसा (सख्त हुआ)।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि काफ़िरों पर खुदा का सख्त अज़ाब आया है।

हेतु (Reason):
यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, जो खुदा के दंडात्मक स्वभाव को प्रस्तुत करता है। हालांकि, यह कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत करता, बल्कि यह विश्वास पर आधारित है। भारतीय दर्शन में, कर्मफल के सिद्धांत के अनुसार, यह विचार कि कोई व्यक्ति अच्छे या बुरे कर्मों के आधार पर दंडित या पुरस्कृत होगा, सही है। लेकिन इसे केवल आस्था के आधार पर प्रस्तुत करना पूरी तरह से प्रमाणित नहीं हो सकता है।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, भगवान ने बुरे कार्य करने वालों को उनके कर्मों के अनुसार दंड देने का वर्णन किया है, जैसे की पुराणों में राक्षसों का नाश। यह विश्वास कर्मफल सिद्धांत से मेल खाता है, लेकिन इसे धार्मिक दृष्टिकोण से अधिक वैज्ञानिक प्रमाण की आवश्यकता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत खुदा के दंडात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका प्रमाण केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। यह एक सशक्त सिद्धांत हो सकता है, लेकिन इसका तर्क और वैज्ञानिक प्रमाण आवश्यक है।

आयत 27 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"अब क्या तुमने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि यक़ीनन खुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर हम (ख़ुदा) ने उसके ज़रिए से तरह-तरह की रंगतों के फल पैदा किए और पहाड़ों में क़तआत (टुकड़े रास्ते) हैं जिनके रंग मुख़तलिफ हैं कुछ तो सफेद (बुर्राक़) और कुछ लाल (लाल) और कुछ बिल्कुल काले सियाह।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत प्रकृति में रंगों और विविधता का वर्णन करती है, जैसे फल, पहाड़ों के रंग और अन्य प्राकृतिक तत्व।

हेतु (Reason):
यह आयत यह बताती है कि प्रकृति के विभिन्न रंग और रूप खुदा के आदेश से उत्पन्न होते हैं। यह प्रमाण के रूप में प्राकृतिक तत्वों का उपयोग करती है, लेकिन यह तत्व केवल धार्मिक दृष्टिकोण से दिखाए गए हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह विवरण सही प्रतीत होता है क्योंकि विभिन्न जलवायु, मृदा और पर्यावरणीय कारक विविध रंगों और रूपों को उत्पन्न करते हैं।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, प्रकृति के विभिन्न रूपों और रंगों का उल्लेख किया गया है, जैसे कि भगवान के रूप में विविधता का अनुभव। यह भी देखा जाता है कि यह रंग और रूप प्रकृति के नियमों के अनुसार आते हैं, जो एक वैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर सत्य हो सकते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रकृति के विविध रूपों को प्रस्तुत करती है, जो भौतिक रूप से सत्य हैं, लेकिन उनका व्याख्यान धार्मिक दृष्टिकोण से किया गया है। इसे प्रमाण के रूप में सही माना जा सकता है, लेकिन इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

आयत 28 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चारपायों की भी रंगते तरह-तरह की हैं उसके बन्दों में ख़ुदा का ख़ौफ करने वाले तो बस उलेमा हैं बेशक ख़ुदा (सबसे) ग़ालिब और बख़्शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि रंगों और रूपों की विविधता केवल प्राकृतिक कारणों से नहीं है, बल्कि यह भी ख़ुदा के आदेश और इरादे से है, और उलेमा (ज्ञानियों) का कार्य खुदा का डर फैलाना है।

हेतु (Reason):
यह आयत यह मानती है कि ज्ञान और समझ केवल उलेमा के पास है, और वही खुदा के डर को फैलाते हैं। हालांकि, विज्ञान और तर्क के दृष्टिकोण से, यह विविधता केवल पर्यावरण और जैविक विकास के कारण उत्पन्न होती है। धार्मिक दृष्टिकोण में यह संदेश महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन यह हर किसी के अनुभव से मेल नहीं खाता।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, ज्ञान का विस्तार केवल एक वर्ग के लिए सीमित नहीं है। ज्ञान को सभी लोगों तक पहुंचाना ही

असली उद्देश्य है। यही दृष्टिकोण व्यावहारिक और समावेशी है, जबकि यह आयत इसे एक विशेष वर्ग (उलेमा) तक सीमित करती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत उलेमा के ज्ञान को ही मुख्य मानती है, लेकिन इसे समग्र रूप से साकारात्मक रूप से देखा जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण सीमित है और समग्र रूप से ज्ञान और सत्य को व्यापक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है।

आयत 29 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"बेशक जो लोग खुदा की किताब पढ़ा करते हैं और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छिपा के और दिखा के (ख़ुदा की राह में) देते हैं वह यक़ीनन ऐसे व्यापार का आसरा रखते हैं जिस्का कभी टाट न उलटेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि जो लोग खुदा के आदेशों का पालन करते हैं, वे एक ऐसे व्यापार में लगे होते हैं जो कभी घाटे में नहीं जाएगा।

हेतु (Reason):
यह धार्मिक दृष्टिकोण से एक आश्वासन है कि धार्मिक कृत्य और विश्वास कभी निष्फल नहीं जाते। हालांकि, वास्तविकता में जीवन के विभिन्न पहलू और घटनाएँ प्रभावित करती हैं, और यह तर्क केवल विश्वास पर आधारित है, न कि प्रमाणित कारणों पर। व्यवसाय और जीवन के सफल होने के लिए बाहरी कारकों और व्यक्ति की मेहनत का योगदान होता है।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, कर्म का सिद्धांत है, जिसमें व्यक्ति के कर्मों के आधार पर उसका भविष्य तय होता है। यहाँ भी एक व्यक्ति का प्रयास और निर्णय उसकी सफलता का कारण बनते हैं, न कि केवल विश्वास और धर्म पर निर्भरता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और यह सिद्धांत केवल विश्वास पर आधारित है। इसे वास्तविकता से जोड़ने के लिए, अधिक तर्क और बाहरी कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

आयत 30 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"जिसका कभी टाट न उलटेगा ताकि ख़ुदा उन्हें उनकी मज़दूरी भरपूर अता करे बल्कि अपने फज़ल (व करम) से उसे कुछ और बढ़ा देगा बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है और बड़ा क़द्रदान है।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि जो लोग खुदा की राह में काम करते हैं, उनका काम कभी बेकार नहीं जाएगा और उन्हें उनके कर्मों का पूर्ण फल मिलेगा।

हेतु (Reason):
यह तर्क धर्म और विश्वास के आधार पर दिया गया है। वास्तविक जीवन में, किसी के कार्यों का परिणाम बहुत से बाहरी कारकों से प्रभावित होता है, जो इसे एक सीमित और संकुचित दृष्टिकोण बना देता है। इसलिए इसे एक स्थायी और प्रमाणित सिद्धांत के रूप में स्वीकार करना चुनौतीपूर्ण है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में, कर्मफल के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी कर्म अंततः व्यक्ति के खुद के कर्तव्यों और प्रयासों के आधार पर होता है। यह आयत एक अधिक साधारण रूप में कर्म के परिणाम को प्रस्तुत करती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक अधिक धार्मिक दृष्टिकोण से कर्मों के फल को बताती है, लेकिन यह भौतिक वास्तविकताओं से परे है। इसे स्वीकार करना व्यक्तिगत विश्वास पर निर्भर है, न कि वैज्ञानिक प्रमाणों पर।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	प्रमाण	दंड का धार्मिक दृष्टिकोण भौतिक प्रमाण के रूप में नहीं देखा जा सकता।
27	प्रमाण	प्राकृतिक विविधता का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही व्याख्यान किया जा सकता है, लेकिन यह धार्मिक रूप से प्रस्तुत किया गया है।
28	प्रमाण	ज्ञान का संकुचित दृष्टिकोण, जिसे केवल उलेमा तक सीमित किया गया है।
29	कारण	धार्मिक विश्वास पर आधारित, भौतिक कारकों को नकारता है।
30	कारण	कर्मों के फल को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना, भौतिक तथ्यों से अनजान।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में कई विचार धार्मिक आस्थाओं पर आधारित हैं, लेकिन इनका भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित होना मुश्किल है। हिंदू दर्शन में कर्मफल और जीवन के सिद्धांतों को अधिक तर्कसंगत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, जो भौतिक वास्तविकताओं से मेल खाते हैं।

आयत 31 से 35 का विश्लेषण

आयत 31 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और हमने जो किताब तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजी वह बिल्कुल ठीक है और जो (किताबें इससे पहले की) उसके सामने (मौजूद) हैं उनकी तसदीक़ भी करती हैं - बेशक ख़ुदा अपने बन्दों (के हालात) से ख़ूब वाक़िफ है (और) देख रहा है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत कहती है कि कुरान उस समय से पहले की किताबों की पुष्टि करता है, और यह परमात्मा के आदेश से बिल्कुल सही है।

हेतु (Reason):
यह दृष्टिकोण एक धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जिसमें यह माना जाता है कि कुरान एक सर्वोत्तम और अंतिम किताब है, जो पिछली किताबों की सत्यता को पुष्ट करती है। लेकिन, इसे तर्क और प्रमाण के संदर्भ में, यह केवल धार्मिक विश्वास पर निर्भर है। अन्य भारतीय धार्मिक ग्रंथों जैसे भगवद गीता और वेदों में भी शाश्वत सत्य की बात की गई है, लेकिन यह दावे को ऐतिहासिक और भौतिक प्रमाण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन में, उदाहरण स्वरूप वेदों और भगवद गीता का कथन है कि शाश्वत सत्य एक ही है, लेकिन यह व्यक्तिगत अनुभव और आस्थाओं पर आधारित होता है। इसे केवल धार्मिक और विश्वास के आधार पर माना जा सकता है, न कि वैज्ञानिक प्रमाणों से।

निगमन (Conclusion):
यह आयत कुरान को अंतिम और सही किताब बताती है, जो पिछली किताबों को प्रमाणित करती है, लेकिन इसका तर्क धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका भौतिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

आयत 32 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"फिर हमने अपने बन्दगान में से ख़ास उनको कुरान का वारिस बनाया जिन्हें (एहल समझकर) मुन्तख़ब किया क्योंकि बन्दों में से कुछ तो (नाफ़रमानी करके) अपनी जान पर सितम ढाते हैं और कुछ उनमें से (नेकी-बदी के) दरमियान हैं और उनमें से कुछ लोग ख़ुदा के इख़तेयार से नेकों में (औरों से) गोया सबकत ले गए हैं (इन्तेख़ाब व सबक़त) तो ख़ुदा का बड़ा फज़ल है।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि कुछ लोग तो अपने कर्मों से नाफ़रमानी करते हैं, कुछ अच्छे कर्म करते हैं, और कुछ सबसे बेहतरीन कर्म करते हैं, और यह सब खुदा के इरादे से होता है।

हेतु (Reason):
यह आयत कर्मों के आधार पर विभिन्न व्यक्तियों के परिणामों को दिखाती है, लेकिन इसका आधार केवल खुदा की इच्छा और चयन पर आधारित है, जो इसे तर्क और कारण के दृष्टिकोण से कमज़ोर बनाता है। भारतीय दर्शन में, कर्मफल का सिद्धांत व्यक्तियों की स्वतंत्र इच्छा और कर्तव्यों पर आधारित होता है, न कि केवल दिव्य चयन पर। यह खुदा की इच्छा से अधिक व्यक्तिगत प्रयास पर निर्भर करता है।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, कर्म का सिद्धांत कहता है कि व्यक्ति के अच्छे और बुरे कर्मों के आधार पर ही उसका भविष्य तय होता है। इसे केवल भाग्य या दिव्य चयन से जोड़ना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और मेहनत की अहमियत को नकारता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत कर्मों के परिणामों को खुदा की इच्छा पर आधारित मानती है, जबकि हिंदू दृष्टिकोण में यह स्वतंत्र कर्म और प्रयास के आधार पर होता है। इसका तर्क केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और इसे तर्कशीलता से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 33 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"(और उसका सिला बेहिश्त के) सदा बहार बाग़ात हैं जिनमें ये लोग दाखिल होंगे और उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और वहाँ उनकी (मामूली) पोशाक ख़ालिस रेशमी होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत जन्नत के पुरस्कार का वर्णन करती है, जिसमें स्वर्ण, मोती और रेशमी वस्त्र मिलेंगे।

हेतु (Reason):
यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से जन्नत की परिकल्पना करती है, जो केवल विश्वास पर आधारित है। वास्तविक जीवन में, किसी व्यक्ति को सुख और समृद्धि प्राप्त करने के लिए भौतिक साधनों, मेहनत और संघर्ष की आवश्यकता होती है, जबकि यह आयत धार्मिक विश्वासों के आधार पर एक आदर्श दृश्य प्रस्तुत करती है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में, स्वर्ग का वर्णन भी एक सुखमय स्थान के रूप में किया गया है, लेकिन यह कोई स्थायी भौतिक पुरस्कार नहीं होता, बल्कि आत्मिक उन्नति और मुक्ति का प्रतीक होता है। यह अधिक तर्कशील और समग्र दृष्टिकोण है, जो केवल भौतिक लाभों पर निर्भर नहीं करता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक आदर्श परिकल्पना प्रस्तुत करती है, जो धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। इसे भौतिक वास्तविकताओं से जोड़ने के लिए अधिक तर्क और व्यावहारिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

आयत 34 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और ये लोग (ख़ुशी के लहजे में) कहेंगे ख़ुदा का शुक्र जिसने हम से (हर क़िस्म का) रंज व ग़म दूर कर दिया बेशक हमारा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला (और) क़दरदान है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि लोग जन्नत में खुशी से यह कहेंगे कि खुदा ने उनके दुखों को दूर कर दिया है।

हेतु (Reason):
यह आयत एक आस्थात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें सुख और दुःख को खुदा की कृपा से जोड़ा गया है। हालांकि, यह कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत करती कि किसी व्यक्ति के जीवन में दुःख और सुख केवल दिव्य आशीर्वाद और कृपा से जुड़े होते हैं। वास्तविकता में, सुख और दुःख बाहरी और आंतरिक कारकों का परिणाम होते हैं, न कि केवल खुदा के आशीर्वाद से।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में, दुख और सुख के पीछे कर्म का सिद्धांत होता है, और इन्हें केवल आंतरिक सुधार और भौतिक परिश्रम से ही बदला जा सकता है। इसका कोई दिव्य कारक नहीं होता, यह व्यक्ति की मेहनत और मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक आस्थात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका प्रमाण और तर्क केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि भौतिक और तात्त्विक प्रमाण पर।

आयत 35 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"जिसने हमको अपने फ़ज़ल (व करम) से हमेशगी के घर (बेहिश्त) में उतारा (मेहमान किया) जहाँ हमें कोई तकलीफ छुयेगी भी तो नहीं और न कोई थकान ही पहुँचेगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत जन्नत के सुखों का वर्णन करती है, जिसमें कोई कष्ट और थकान नहीं होगी।

हेतु (Reason):
यह एक आदर्श परिकल्पना है, जो विश्वास पर आधारित है। यह भौतिक जीवन के संघर्षों और कष्टों से परे है और एक आत्मिक स्थिति की ओर इशारा करती है। हालांकि, यह कोई भौतिक सत्य नहीं है, बल्कि यह एक धार्मिक आदर्श है।

उदाहरण (Example):
हिंदू धर्म में, मोक्ष की अवधारणा भी इसी प्रकार की है, जहाँ आत्मा को किसी भी प्रकार के कष्ट से मुक्ति मिलती है। लेकिन यह केवल एक आंतरिक, मानसिक और आत्मिक स्थिति है, न कि भौतिक वास्तविकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित एक आदर्श स्थिति का वर्णन करती है, लेकिन इसे भौतिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह एक आस्थात्मक विचार है। इसे प्रमाणित करने के लिए वैज्ञानिक और भौतिक प्रमाण की आवश्यकता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	प्रमाण	यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, भौतिक प्रमाण का अभाव है।
32	कारण	कर्मों के परिणामों को केवल खुदा की इच्छा से जोड़ना तर्कशील नहीं है।
33	प्रमाण	यह धार्मिक आदर्श है, भौतिक प्रमाण की आवश्यकता है।
34	प्रमाण	यह आस्थात्मक दृष्टिकोण है, कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
35	प्रमाण	यह भी धार्मिक आदर्श है, तात्त्विक प्रमाण का अभाव है।

यह विश्लेषण दिखाता है कि ये आयतें धार्मिक विश्वासों और आस्थाओं पर आधारित हैं, लेकिन इनका भौतिक और तात्त्विक प्रमाण नहीं है। इसे केवल आस्थाओं के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, जबकि भारतीय दर्शन और तात्त्विक दृष्टिकोण इसे तर्क और प्रमाण से जोड़ने की आवश्यकता महसूस करते हैं।

आयत 36 से 40 का विश्लेषण

आयत 36 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और जो लोग काफ़िर हो बैठे उनके लिए जहन्नुम की आग है, न उनकी क़ज़ा ही आएगी कि वह मर जाए और तकलीफ से नजात मिले और न उनसे उनके अज़ाब ही में तख़फीफ की जाएगी। हम हर नाशुक्रे की सज़ा यूँ ही किया करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत काफ़िरों के लिए स्थायी और बर्बर दंड का संकेत करती है, जिसमें न कोई मृत्यु होगी जो राहत दे सके, न ही दंड में कोई कमी की जाएगी।

हेतु (Reason):
यह आयत एक सख्त और निराशाजनक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें काफ़िरों को शाश्वत पीड़ा का सामना करना पड़ेगा। इसका आधार धार्मिक विश्वास है और यह भौतिक या तात्त्विक प्रमाण से संबंधित नहीं है। भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत के अनुसार, किसी व्यक्ति का कार्य उसका परिणाम बनता है, और प्रत्येक आत्मा को मुक्त होने का अवसर होता है, जबकि यह आयत केवल दंड और पीड़ा के बारे में बात करती है।

उदाहरण (Example):
हिंदू दर्शन में, पापी व्यक्तियों के लिए भी मुक्ति के दरवाजे खुले होते हैं, जैसे भगवद गीता में कहा गया है कि जो सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं, वे भी मुक्ति पा सकते हैं। यह दृष्टिकोण क्षमा और सुधार के पक्ष में है, न कि शाश्वत दंड के पक्ष में।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक आस्थात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जिसमें काफ़िरों के लिए स्थायी और बिना किसी छूट के दंड का वर्णन किया गया है, लेकिन इसे भौतिक और तात्त्विक सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

आयत 37 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और ये लोग दोज़ख़ में (पड़े) चिल्लाया करेगें कि परवरदिगार अब हमको (यहाँ से) निकाल दे तो जो कुछ हम करते थे उसे छोड़कर नेक काम करेंगे (तो ख़ुदा जवाब देगा कि) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी थी कि जिनमें जिसको जो कुछ सोंचना समझना (मंज़ूर) हो ख़ूब सोच समझ ले और (उसके अलावा) तुम्हारे पास (हमारा) डराने वाला (पैग़म्बर) भी पहुँच गया था तो (अपने किए का मज़ा) चखो क्योंकि सरकश लोगों का कोई मद्दगार नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि काफ़िरों को पछताने और सुधारने का मौका नहीं मिलेगा, और उन्हें अपने किए का सजा मिलेगा।

हेतु (Reason):
यह आयत काफ़िरों के लिए एक कड़ी सजा का वर्णन करती है, जिसमें उन्हें सुधारने का कोई अवसर नहीं दिया जाएगा। यह दृष्टिकोण विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, लेकिन भारतीय दर्शन में इस प्रकार की स्थिति नहीं मानी जाती। हिंदू धर्म में, प्रत्येक व्यक्ति को पुनः जन्म और आत्मा के सुधार का अवसर दिया जाता है। आत्मिक उन्नति की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली होती है, और कोई व्यक्ति अपने कर्मों के फल से सुधार की ओर बढ़ सकता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि व्यक्ति का हर कर्म उसका भविष्य तय करता है और आत्मा का सुधार कभी भी संभव है। हिंदू दर्शन में पुनर्जन्म और आत्मिक उन्नति का सिद्धांत है, जिससे हर आत्मा को सुधार का अवसर मिलता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत काफ़िरों के लिए सुधार के कोई अवसर न देने का दावा करती है, जबकि भारतीय दर्शन में आत्मा का सुधार निरंतर संभव होता है। यह दृष्टिकोण तर्क और भौतिक प्रमाण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

आयत 38 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"बेशक ख़ुदा सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों से ख़ूब वाकिफ़ है वह यक़ीनी दिलों के पोशीदा राज़ से बाख़बर है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि खुदा सभी छिपी हुई बातों और दिलों के राज़ से पूरी तरह वाकिफ है।

हेतु (Reason):
यह आयत दर्शाती है कि खुदा के पास संपूर्ण ज्ञान है, लेकिन इस पर आधारित कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया जा सकता। भारतीय दर्शन में यह सत्य माना जाता है कि आत्मा के भीतर और

बाहर के सभी सत्य को एक निश्चित रूप से नहीं समझा जा सकता, और व्यक्ति को अपने भीतर की समझ और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

उदाहरण (Example):
वेदों और भगवद गीता में कहा गया है कि परमात्मा का ज्ञान अनंत है और कोई भी व्यक्ति इस ज्ञान को अपनी आत्मिक साधना और तात्त्विक दृष्टिकोण से प्राप्त कर सकता है। यह ज्ञान मानव अनुभव से परे होता है, लेकिन इसे प्रमाणित करना कठिन है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से खुदा के सर्वज्ञता का दावा करती है, लेकिन इस पर कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया जा सकता है। यह केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 39 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"वह वही ख़ुदा है जिसने रूए ज़मीन में तुम लोगों को (अगलों का) जानशीन बनाया फिर जो शख़्स काफ़िर होगा तो उसके कुफ्र का वबाल उसी पर पड़ेगा और काफ़रों को उनका कुफ्र उनके परवरदिगार की बारगाह में ग़ज़ब के सिवा कुछ बढ़ाएगा नहीं और कुफ़्फ़ार को उनका कुफ्र घाटे के सिवा कुछ नफ़ा न देगा।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि काफ़िरों के कुफ्र का परिणाम केवल उनके लिए होगा और यह उन्हें केवल घाटे की ओर ले जाएगा।

हेतु (Reason):
यह आयत तर्क करती है कि काफ़िरों का कुफ्र उन्हें केवल घाटा ही देगा, और इसको कोई अन्य परिणाम नहीं होगा। यह दृष्टिकोण धर्म पर आधारित है और यह जीवन में कर्म और फल के सिद्धांत से मेल नहीं खाता। भारतीय दर्शन में, कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों से उन्नति की ओर बढ़ सकता है और कोई भी आत्मा सद्गति के मार्ग पर जा सकती है।

उदाहरण (Example):
 भगवद गीता में कर्म के सिद्धांत के आधार पर व्यक्ति को अपनी स्थिति सुधारने और जीवन में नए मार्ग पर चलने का अवसर मिलता है। यह सिद्धांत आत्मा के निरंतर सुधार की ओर इंगीत करता है।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत काफ़िरों के लिए केवल घाटे का दावा करती है, जबकि भारतीय दर्शन में आत्मा को हर समय सुधारने और उन्नति की दिशा में प्रयास करने का अवसर दिया जाता है।

आयत 40 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
 "(ऐ रसूल) तुम (उनसे) पूछो तो कि ख़ुदा के सिवा अपने जिन शरीकों की तुम क़यादत करते थे क्या तुमने उन्हें (कुछ) देखा भी मुझे भी ज़रा दिखाओ तो कि उन्होंने ज़मीन (की चीज़ों) से कौन सी चीज़ पैदा की या आसमानों में कुछ उनका आधा साझा है या हमने ख़ुद उन्हें कोई किताब दी है कि वह उसकी दलील रखते हैं (ये सब तो कुछ नहीं) बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से (धोखे और) फरेब ही का वायदा करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
 प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत बताती है कि जो लोग शरीक मानते हैं, उनसे यह पूछा जाए कि क्या उन्होंने कुछ उत्पन्न किया है या क्या उनके पास कोई प्रमाण है?

हेतु (Reason):
 यह आयत विश्वास और प्रमाण के मुद्दे पर आधारित है। लेकिन, यह केवल विश्वास पर आधारित है और भौतिक दृष्टिकोण से इसे साबित नहीं किया जा सकता है। भारतीय दर्शन में, परमात्मा की एकता और उसका अस्तित्व भौतिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है, लेकिन यह केवल विश्वास पर आधारित होता है, जिसे कोई तात्त्विक या भौतिक प्रमाण से प्रमाणित करना कठिन होता है।

उदाहरण (Example):
 वेदों और भगवद गीता में परमात्मा की एकता का उल्लेख है, लेकिन इसे प्रमाणित करना भौतिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है, क्योंकि यह आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित है।

****निगमन** (Conclusion):

**

यह आयत विश्वास और प्रमाण के मुद्दे को उठाती है, लेकिन इसे भौतिक और तात्त्विक सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। यह केवल विश्वास और आस्थाओं पर आधारित है।

आयत 36 से 40 का विश्लेषण - सारणी

आयत संख्या	तात्त्विक आलोचना	न्याय तत्व	भारतीय दर्शन संदर्भ
36	**काफ़िरों के लिए स्थायी दंड का दावा, लेकिन इसे भौतिक प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**	**प्रमाण** (Pramana)	**हिंदू दर्शन में मुक्ति के अवसर की संभावना है, जैसे भगवद गीता में कहा गया है कि पश्चाताप से मुक्ति संभव है।**
37	**काफ़िरों को सुधार का कोई अवसर नहीं दिया जाता, जबकि हिंदू दर्शन में आत्मा का सुधार निरंतर संभव है।**	**प्रमाण** (Pramana)	**भगवद गीता में कर्म के सिद्धांत के आधार पर आत्मा के सुधार का निरंतर अवसर है।**
38	**खुदा के सर्वज्ञता का दावा किया गया है, लेकिन यह भौतिक और तात्त्विक प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**	**प्रमाण** (Pramana)	**वेदों और भगवद गीता में परमात्मा का ज्ञान अनंत माना गया है, लेकिन यह अनुभव और आध्यात्मिक साधना पर आधारित है।**
39	**काफ़िरों के कुफ्र का परिणाम केवल घाटे तक सीमित है, जबकि हिंदू दर्शन में आत्मा के सुधार की निरंतर प्रक्रिया है।**	**कारण** (Hetu)	**भगवद गीता में कर्म के सिद्धांत के आधार पर सुधार और उन्नति का अवसर है।**
40	**विश्वास और प्रमाण पर आधारित**	**प्रमाण**	**वेदों और भगवद गीता में परमात्मा की**

है, लेकिन भौतिक दृष्टिकोण से इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।	(Pramana)	एकता का उल्लेख है, जिसे भौतिक प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष:

यह आयतें धर्म, दंड, और कर्म के सिद्धांतों को प्रस्तुत करती हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश भौतिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं की जा सकती हैं। भारतीय दर्शन में आत्मा का सुधार और उन्नति की निरंतर प्रक्रिया को माना गया है, जबकि इन आयतों में दंड और सुधार के अवसर सीमित हैं। इन आयतों का तात्त्विक विश्लेषण दर्शाता है कि भारतीय दर्शन में अधिक लचीलापन और सुधार का अवसर प्रदान किया जाता है, जो इस्लामी दृष्टिकोण से भिन्न है।

आयत 41 से 45 का विश्लेषण

आयत 41 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"बेशक ख़ुदा ही सारे आसमान और ज़मीन अपनी जगह से हट जाने से रोके हुए है और अगर (फर्ज़ करे कि) ये अपनी जगह से हट जाए तो फिर तो उसके सिवा उन्हें कोई रोक नहीं सकता, बेशक वह बड़ा बर्दबर (और) बड़ा बख़्शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन को अपनी जगह पर रोका हुआ है, और अगर वह स्थान से हट जाएं तो कोई उन्हें रोकने वाला नहीं है।

हेतु (Reason):
यह आयत ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता और नियंत्रण को स्थापित करती है, लेकिन इस विचार को तात्त्विक या भौतिक दृष्टिकोण से प्रमाणित करना मुश्किल है। भारतीय दर्शन में, सृष्टि का संचालन शाश्वत नियमों द्वारा

होता है, जिसमें ब्रह्मा, शिव और विष्णु के माध्यम से सृष्टि का निर्माण, पालन और संहार होता है। यह सिद्धांत पूरी तरह से विश्वास आधारित है और इसे भौतिक प्रमाण से सिद्ध करना कठिन है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कहा गया है कि भगवान ही सृष्टि के कर्ता और पालनहार होते हैं, और उनका कार्य शाश्वत है, लेकिन यह कर्म किसी भौतिक प्रक्रिया से नहीं बल्कि आध्यात्मिक और दार्शनिक रूप से समझा जा सकता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता को स्थापित करती है, लेकिन इसे भौतिक या तात्त्विक सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। यह विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

आयत 42 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और ये लोग तो ख़ुदा की बड़ी-बड़ी सख़्त क़समें खा (कर कहते) थे कि बेशक अगर उनके पास कोई डराने वाला (पैग़म्बर) आएगा तो वह ज़रूर हर एक उम्मत से ज़्यादा रूबसह होंगे, फिर जब उनके पास डराने वाला (रसूल) आ पहुँचा तो (उन लोगों को) रूए ज़मीन में सरकशी और बुरी-बुरी तद्बीरें करने की वजह से (42)"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि लोग क़समें खाकर कहते थे कि यदि कोई पैग़म्बर आएगा, तो वह उन पर काबू पा लेगा, लेकिन जब वह आया, तो उन्होंने उसे नकारा और बुरी तद्बीरों को अपनाया।

हेतु (Reason):
यह आयत मानवीय स्वभाव और पूर्वाग्रह को दर्शाती है। हालांकि, यह दृष्टिकोण सच्चाई और तर्क पर आधारित नहीं है। भारतीय दर्शन में, आत्मा का उन्नति और सुधार निरंतर संभव होता है, और व्यक्ति के मार्गदर्शन के लिए जो व्यक्ति आता है, उसे स्वीकारने का फैसला आत्मा का स्वतंत्र कार्य है। काफ़िरों द्वारा पैग़म्बर को नकारना सिर्फ़ एक अस्थायी मानसिक स्थिति है और इसे सिर्फ़ धार्मिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा कि आत्मा का विकास निरंतर होता है, और जो व्यक्ति सच्चे मार्ग पर चलता है, वह सत्य की ओर बढ़ता है। यह दृष्टिकोण मानवीय स्वतंत्रता और आत्मिक सुधार को मान्यता देता है, जबकि यह आयत केवल नफरत और विरोध की कहानी प्रस्तुत करती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल मानवीय व्यवहार और पूर्वाग्रह को दर्शाती है, लेकिन यह तात्त्विक या भौतिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं की जा सकती। भारतीय दर्शन में आत्मा के सुधार का निरंतर अवसर होता है, जो इस आयत के विपरीत है।

आयत 43 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"तो (हो न हो) ये लोग बस अगले ही लोगों के बरताव के मुन्तज़िर हैं तो (बेहतर) तुम ख़ुदा के दस्तूर में कभी तब्दीली न पाओगे और ख़ुदा की आदत में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि ख़ुदा के नियम में कभी कोई बदलाव नहीं होगा, और लोग सिर्फ़ पूर्वजों की गलतियों का पालन करेंगे।

हेतु (Reason):
यह आयत एक स्थिर और अपरिवर्तनीय दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जिसमें यह कहा गया है कि ख़ुदा के नियम हमेशा वही रहेंगे। यह दृष्टिकोण भौतिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। भारतीय दर्शन में, परमात्मा के नियमों को समझने का तरीका समय के साथ बदल सकता है, और यह हर व्यक्ति की आत्मिक स्थिति और उसके द्वारा किए गए कर्मों पर निर्भर करता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में कहा गया है कि हर युग में भगवान का रूप और उसका कार्य अलग-अलग होता है, लेकिन उसका उद्देश्य और मार्गदर्शन हमेशा एक ही होता है। यह दर्शाता है कि धार्मिक सिद्धांत समय और परिस्थिति के अनुसार बदल सकते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत स्थिरता और अपरिवर्तनीयता का दावा करती है, लेकिन भारतीय दर्शन में समय के साथ बदलाव और विकास को स्वीकार किया जाता है। यह आयत भौतिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं की जा सकती।

आयत 44 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"तो क्या उन लोगों ने रूए ज़मीन पर चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उनके पहले थे और उनसे ज़ोर व कूवत में भी कहीं बढ़-चढ़ के थे, फिर उनका (नाफ़रमानी की वजह से) क्या (ख़राब) अंजाम हुआ और ख़ुदा ऐसा (गया गुज़रा) नहीं है कि उसे कोई चीज़ आजिज़ कर सके (न इतने) आसमानों में और न ज़मीन में, बेशक वह बड़ा ख़बरदार (और) बड़ी (क़ाबू) कुदरत वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि जो लोग अपने पूर्वजों की गलतियों से सीखते नहीं हैं, उनका अंजाम बुरा होता है, और ख़ुदा की शक्ति अपरिवर्तनीय है।

हेतु (Reason):
यह आयत एक आस्थात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जिसमें अतीत के गलतियों को न मानने वालों को सजा का सामना करना पड़ता है। हालांकि, भारतीय दर्शन में यह देखा गया है कि आत्मा का सुधार निरंतर चलता रहता है, और हर व्यक्ति को सुधारने का अवसर होता है। ख़ुदा की शक्ति भले ही अपरिवर्तनीय हो, लेकिन उसकी कृपा और क्षमा का सिद्धांत भी होता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में यह बताया गया है कि जो व्यक्ति आत्मा के मार्ग पर चलता है, वह हमेशा सुधार की दिशा में बढ़ सकता है। यह सिद्धांत ख़ुदा की कृपा और अवसर के साथ मेल खाता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ख़ुदा की अपरिवर्तनीय शक्ति को दर्शाती है, लेकिन भारतीय दर्शन में आत्मा के सुधार की निरंतर प्रक्रिया और ख़ुदा की कृपा का भी सिद्धांत है। यह आयत केवल आस्थाओं पर आधारित है और तात्त्विक या भौतिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं की जा सकती।

आयत 45 का विश्लेषण

आयत का अनुवाद:
"और अगर (कहीं) ख़ुदा लोगों की करतूतों की गिरफ्त करता तो (जैसी उनकी करनी है) रूए ज़मीन पर किसी जानवर को बाक़ी न छोड़ता मगर वह तो एक मुक़र्रर मियाद तक लोगों को मोहलत देता है (कि जो करना हो कर लो) फिर जब उनका (वह) वक्त आ जाएगा तो ख़ुदा यक़ीनी तौर पर अपने बन्दों (के हाल) को देख रहा है (जो जैसा करेगा वैसा पाएगा)।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि अगर ख़ुदा लोगों की करतूतों के अनुसार उन्हें तुरंत दंड देता, तो कोई भी जीव जीवित नहीं रहता, लेकिन वह उन्हें एक निर्धारित समय तक मोहलत देता है।

हेतु (Reason):
यह आयत ख़ुदा के दंड देने की प्रक्रिया को दर्शाती है, जो उसके विलंबित और सटीक न्याय के सिद्धांत को स्वीकार करती है। हालांकि, भारतीय दर्शन में यह दृष्टिकोण विचारणीय है क्योंकि कर्म का फल निरंतर होता है, और कोई भी आत्मा अपने कर्मों के अनुसार दंड और पुरस्कार प्राप्त करती है। इस सिद्धांत में विलंबित दंड को देखा जा सकता है, लेकिन यह कर्म के सिद्धांत से

मेल खाता है।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता में यह कहा गया है कि कर्म का फल निश्चित होता है और समय के साथ प्रतिफलित होता है। यह आयत इस सिद्धांत के अनुरूप है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ख़ुदा के न्याय और दंड की प्रक्रिया को दर्शाती है, जो भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन यह भी मानवीय दृष्टिकोण से सीमित है।

निष्कर्ष सारणी:

आयत संख्या	तात्त्विक आलोचना	न्याय तत्व	भारतीय दर्शन संदर्भ
41	ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता का दावा किया गया है, जो प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।	प्रमाण (Pramana)	ब्रह्मा, शिव और विष्णु के माध्यम से सृष्टि की निरंतरता समझी जाती है।
42	काफ़िरों द्वारा पैग़म्बर की नफरत और विरोध पर आधारित।	कारण (Hetu)	भारतीय दर्शन में आत्मा का सुधार निरंतर होता है।
43	स्थिरता और अपरिवर्तनीयता का दावा किया गया है, जो भारतीय दर्शन के अनुसार बदल सकता है।	प्रमाण (Pramana)	भगवद गीता में भगवान के रूप में समय के अनुसार बदलाव होता है।
44	नफरत और पूर्वाग्रह को दर्शाती है, लेकिन आत्मा के सुधार के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।	प्रमाण (Pramana)	आत्मा का सुधार निरंतर होता है और समय के साथ बदलाव संभव है।
45	ख़ुदा के दंड और न्याय की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है, जो भारतीय कर्म के सिद्धांत से मेल खाती है।	कारण (Hetu)	कर्म का फल निश्चित होता है, जो भगवद गीता में उल्लेखित है।